हमारे प्रभु Jesus Christ का नाम सदा धन्य हो।
मैं आपका फिर से स्वागत करता हूँ, ताकि हम जीवन के वचनों पर मनन कर सकें।

आज हम दो व्यक्तियों की कहानी पर संक्षेप में विचार करेंगे। पहला व्यक्ति है Jairus, जो आराधनालय का प्रधान था। दूसरी एक स्त्री थी, जिसे बारह वर्षों से रक्तस्राव की बीमारी थी, और अंत में वह केवल यीशु के वस्त्र के किनारे को छूकर चंगी हो गई।

आइए पवित्रशास्त्र से पढ़ें:

“जब यीशु लौटे तो भीड़ ने उनका आनन्द से स्वागत किया,
क्योंकि वे सब उनकी बाट जोह रहे थे।
और देखो, याईर नाम का एक मनुष्य आया, जो आराधनालय का प्रधान
था; वह यीशु के चरणों पर गिरकर उनसे विनती करने लगा कि मेरे घर चलें;
क्योंकि उसकी एक ही बेटी थी, जिसकी आयु लगभग बारह वर्ष की थी, और वह मरने पर थी…
और एक स्त्री, जिसे बारह वर्ष से रक्तस्राव था और जिसने वैद्यों पर अपना सब धन खर्च कर दिया था, परन्तु किसी से भी चंगी न हो सकी,

पीछे से आकर उसके वस्त्र का किनारा छू लिया, और तुरन्त उसका रक्तस्राव बन्द हो गया।”
(Gospel of Luke 8:40–44)

यहाँ हम एक गहरी बात देखते हैं: याईर की बेटी बारह वर्ष की थी जब वह मृत्यु के निकट पहुँची। उसी समय वह स्त्री भी बारह वर्षों से अपनी बीमारी से पीड़ित थी। बाइबल ने इन दोनों के “बारह वर्षों” का उल्लेख विशेष कारण से किया है।

याईर की वह एक ही संतान थी। सम्भव है उसने उसे बड़े प्रेम और आशा से पाला हो। शायद उसने सोचा होगा कि यही उसकी बुढ़ापे की शान और आनन्द बनेगी। जैसे Jochebed ने बचपन से ही Moses में विशेषता देखी और उसे छिपाकर बचाया — और बाद में वही इस्राएल का छुड़ाने वाला बना।

शायद याईर ने भी अपनी बेटी में भविष्य की आशा देखी हो — कि वह एक दिन परमेश्वरभक्त स्त्री बनेगी, जैसे Hannah या Sarah। उसने उसे जन्म से लेकर ग्यारह वर्ष तक सम्भालकर पाला। लेकिन बारहवें वर्ष अचानक उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। महीने दर महीने हालत खराब होती गई, और वह मृत्यु के निकट पहुँच गई।

ऐसी स्थिति में वह क्या करे?

क्या वह अपनी बारह वर्षों की आशा को मरने दे?
नहीं। उसने हार नहीं मानी। उसने अपने सपनों को बुझने नहीं दिया। वह यीशु को ढूँढ़ने निकल पड़ा।

दूसरी ओर, वह स्त्री भी बारह वर्षों से संघर्ष कर रही थी — ठीक उतने ही वर्षों से, जितनी उम्र उस लड़की की थी। पहले वर्ष से लेकर दूसरे, तीसरे… ग्यारहवें वर्ष तक उसने चंगाई ढूँढ़ी। बाइबल कहती है कि उसने अपना सारा धन वैद्यों पर खर्च कर दिया, पर उसे कोई लाभ न हुआ। बारहवें वर्ष में भी वह वैसी ही थी।

परन्तु एक दिन उसने सुना कि यीशु नगर में हैं। उसने कहा, “मैं बारह वर्षों की अपनी प्रतीक्षा को आज निराशा में समाप्त नहीं होने दूँगी। मैं यीशु के पास जाऊँगी।”

दोनों अपने-अपने मार्ग पर निकले। और जैसा कि हमने पढ़ा, मसीह ने दोनों को चंगा किया। उन्होंने वही पाया जिसका वे इंतज़ार कर रहे थे।

आज हमें भी यह सीखना चाहिए: कभी-कभी हमें उन दर्शनों और बुलाहट के लिए संघर्ष करना पड़ता है, जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में रखे हैं। चाहे बाधा कितनी भी बड़ी क्यों न हो, हार मत मानो।

अपनी समस्या यीशु को सौंप दो और उसे सब कुछ नष्ट न करने दो।

कुछ लोग जिन्होंने कभी परमेश्वर की सेवा शुरू की थी, आगे भी बढ़े थे, परन्तु शैतान की धमकियों या कठिनाइयों से डरकर रुक गए। मेरे भाई, मेरी बहन — अपनी मेहनत को व्यर्थ मत जाने दो।

याद रखो, कई लोग उसी चीज़ के लिए वर्षों से प्रार्थना कर रहे हैं जो तुम्हारे पास पहले से है। वे हार नहीं मानते। तो तुम क्यों हार मानो?

याईर की बेटी के बारह वर्ष और उस स्त्री के बारह वर्ष एक जैसे नहीं थे। उसी प्रकार तुम्हारी वर्तमान समस्या तुम्हारे जीवन की बुलाहट को रोक नहीं सकती।

विजय पाने के लिए संघर्ष करना आवश्यक है।
इसलिए आगे बढ़ते रहो।

केवल परमेश्वर के कार्य में ही नहीं, बल्कि उन सभी बातों में जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हैं — कभी निराश मत हो।

प्रभु तुम्हें बहुत आशीष दें।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp